अंक 71

उद्भावना

जन भावनाओं का साझा मंच

ज्योति बसु विशेषांक

संपादन : सरला माहेश्वरी

उद्भावना

वर्ष : 22, अंक : 71, अप्रैल 2006

ज्योति बसु विशेषांक

अतिथि संपादक
सरला माहेश्वरी

संपादक
अजेय कुमार

संपादक मंडल
रामप्रकाश त्रिपाठी, हरियश राय, रमन मिश्र

सलाहकार मंडल
असग़र वजाहत, डा. राजकुमार शर्मा, राजेश जोशी, केवल गोस्वामी

सहयोग
रामपाल कटवालया

आवरण
इंद्रनाथ बनर्जी

संपादकीय पता
एच-55, सेक्टर 23, राजनगर, गाजियाबाद

प्रबंधकीय पता
ए-21, झिलमिल इंडस्ट्रिएल एरिया, जी. टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-95
फोन: 22582847, 22119770 E mail: progres1@ndf.vsnl.net.in
(सभी पत्र-व्यवहार प्रबंधकीय पते पर ही करें)

मूल्य : 50 रुपये (पेपरबैक) **150 रुपये** (सजिल्द)

(इस अंक में ज्योति बसु के बारे में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संपादकीय सहमति होना अनिवार्य नहीं है।)

सूची

सम्पादकीय

कर्मयोगी कामरेड ज्योति बसु : *सरला माहेश्वरी* 5

लेख

बहुत ही सरल और समर्पित कामरेड : *हरकिशन् सिंह सुरजीत* 11

भारतीय राजनीति में एक अदभुत फेनोमेना :*वी. पी. सिंह* 13

मेरे आदर्श ज्योति बसु : *सोमनाथ चटर्जी* 15

कम्युनिस्ट के रूप में एक मिसाल : *प्रकाश कारात* 21

एक उदार मानवीय व्यक्तित्व : *सीताराम येचुरी* 23

ज्योति बसु के बारे में : *अनिल विश्वास* 25

संघर्षों की आग में तप कर निखरा व्यक्तित्व : *विमान बसु* 27

ज्योति बाबू : *ए बी बर्द्धन* 32

भारत में वामपंथी आंदोलन का एक विराट व्यक्तित्व : *अशोक घोष* 34

ट्रेड यूनियन नेता : *एम के पंधे* 37

ज्योति बाबू के साथ : *विप्लव दाशगुप्ता* 42

ज्योति बसु एक यथार्थवादी, प्रतिबद्ध और सम्मानित व्यक्ति हैं : *कुलदीप नायर* 51

एक विनम्र श्रद्धांजलि : *एजाज़ अहमद* 54

कामरेड ज्योति बसु की जीवन यात्रा—
विकल्प की तलाश अभी जारी है : *पी सी जोशी* 59

ज्योति बसु, वाम मोर्चा और प. बंगाल की अर्थव्यवस्था : *प्रभात पटनायक* 71

पश्चिम बंगाल में मानव विकास और ज्योति बसु : *जयति घोष* 75

हमारे समय के एक दुर्लभ अपवाद : *डॉ. शिव कुमार मिश्र* 85

'इतिहास में व्यक्ति'-विमर्श और ज्योति बसु : *अरुण माहेश्वरी* 90

सीपीआई(एम) का 'ब्रांड एंबेसेडर' : *सुधीश पचौरी* 98

ज्योति बसु की तुलना वे खुद ही हैं : *इंद्रनाथ बनर्जी* 103

एक अनोखा व्यक्तित्व : *खगेन्द्र ठाकुर* 107

ज्योति बसु : एक साहित्यिक कार्यकर्ता की टिप्पणियाँ : *राजेश जोशी* 112
एक नायक की सफलता का रहस्य : *अरुण पाण्डेय* 115

साक्षात्कार

शेखर गुप्ता की ज्योति बसु से एक बातचीत 121
पार्वती मेनन की ज्योति बसु से एक मुलाकात 130

बकलम ज्योति बसु

आलेख : कम्युनिस्टों का लक्ष्य और रास्ता 145

कुछ चुनिंदा भाषण

औपनिवेशिक संसदीय जनतंत्र 158
प्रजातंत्र में मानव अधिकारों की भूमिका 162
विकेन्द्रीकरण की विकल्प धारणा 166
भूमि सुधार ही पंचायतों की अग्रगति का आधार 173
भारत में मार्क्सवाद का प्रभाव 178
सामाजिक यथार्थ का वस्तुनिष्ठ और निडर चित्रण 189

1967 से 2003 तक ज्योति बसु के राजनीतिक जीवन
की कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं का ब्यौरा 192

फोटो फीचर 207

संपादकीय

कर्मयोगी कामरेड ज्योति बसु

दु:खेष्वनुद्विग्नमना: सुखेषु विगतस्पृह: ।
वीतरागभयक्रोध: स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥ (2 / 56)
(नहीं होता / दु:ख में उद्विग्नमन जो, / और सुख में / रहे नि:स्पृह, / राग, भय औ' क्रोध / जिसके नष्ट हैं—/ उस (पुरुष) को / कहा स्थिर-बुद्धि जाता।)

ज्यक्त्वा कर्मफलासंगं नित्यतृप्तो निराश्रय: ।
कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किंचित् करोति स: ॥ (4 / 20)
(कर्मफल के मोह को जो छोड़ देता, / नहीं रहता दूसरों पर कभी आश्रित, / औ' सदा ही तृप्त रहकर—/ कर्म करने के लिये होता प्रवृत्त जो; / ऐसा पुरुष— / -करता कुछ नहीं वस्तुत: — / सारे कर्म करते हुए भी।) *

हमारी आजादी की लड़ाई के कई शीर्षस्थ नेताओं ने अनासक्त भाव से अपना कर्म करते चले जाने के गीता के उपदेश का अपने जीवन के संदर्भ में भारी महत्व के साथ जिक्र किया है। सचमुच, एक ऐसी महाबली, आततायी औपनिवेशिक शक्ति से, जिसका सूरज कभी न ढलता हो, लोहा लेने का संकल्प कोई मामूली बात नहीं थी। यह वैसे ही स्थितप्रज्ञ, अनासक्त कर्मयोगी व्यक्तित्वों के वश में था, जिनका जिक्र श्रीमद् भागवद्गीता में कृष्ण ने किया था। इसके अलावा, वह काम ऐसे किसी एक-दो कर्मयोगियों के वश का भी नहीं था, इसके लिये संकल्पवान मुमुक्षु, सेनानियों की एक पूरी कुमुक की जरूरत थी। सोने को तपा कर कुंदन बनाने वाली वह एक ऐसी आग थी, जिसमें हमारी आजादी की लड़ाई ने ऐसे एक-दो नहीं, सैकड़ों-हजारों जितेन्द्रिय, आत्मजयी मनुष्यों का निर्माण किया। उनमें मतों की भिन्नता कितनी ही क्यों न रही हो, लक्ष्य के प्रति एकाग्रता समान थी। उस पीढ़ी ने ही, हमारे आज का जो भी श्रेष्ठ है, उसका निर्माण किया है। कहना न होगा कि भारत का कम्युनिस्ट आंदोलन भी उस पीढ़ी के ऋण से कभी उऋण नहीं हो पायेगा। ज्योति बसु उन्हीं में से एक और अनन्य हैं।